TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4486**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥६॥ मोरा स्वामि वाहा आभातलनायक वानतासुएा एक मोरडा उम सांजे हो तुं दान दे ने पाल। वात
सुएोए कमोरडा ॥१॥ तिएा तोरज हो ऊ आयो पासिक मुरुमन आसा वे घएा। कर जोडा हो कऊं मने
ना वातक तुं सुएि जे विस्तु वधएा ॥२॥ ऊंस मायो हो सवु समुद्र मुजारक। उम अनंता मैं सह्या। तुं नाए
हितु हो जंजिएा रायक मैं किम जाएांत कहा ॥३॥ सा गजोग हो तो रो आस्रावतक। दरसएा ने लेनारषा
मे मन मान्य हो मोरो मा आराहतक होवडो हे जे अरषात ॥४॥ एक नो प्रेहो मे का पो आजक। तुं ऊ विनदे
वरो तो न हो। चिंतामएा हो जो पायजरते नाता। का चुग्रहे न हा को सहा ॥५॥ पेचाम्रत हो जो सो जनका
घतज। षन्नाषा वो मनकिम षाय। कवतां इता जेज अम्रत पीधजे तो। पारो जन कतज कुएा पावइ ॥६॥
मोता को तो जेज मति स्यो हारतज। चिरमइ कुएा पहिरहायज। जेज सुगाढइ हा स्नाष को डिगरषक
व्याज को दाराम कामरायइ ॥७॥ घर माहि हो जेज प्रगट्यो नाध्यानक। दस तरकतकुएा सम्मे। सोना को
तो नो यो रसो जतो। धातर वदा कुएा धमें ॥९॥ जिएा को धाता भेतरका व्यापारतज। मएा हा रामता कामक
रे ॥१०॥ जाएा को धाता सदा हो जेज कामतज। तिनु कासो काम षमै ॥११॥ ऊ सा हिव हो मारो जाव नप्राएा
तज। ऊं प्रभु सेवक ता हारा। मोरो नावत हो आजिनम्म प्रमाएा तज। सेवउ षसांमी माहरो ॥१२॥ ऊं गमुरति
ता दषता प्रायुक। समव संग्या से ससा। जाएा वेचन इ हा जिएा सारा षाना एक। मुषिषने सासो कारे ॥१३॥
तुं मव रस मएा हो मुज आएाद मुराका। नाम जगा चेर ज्यो रडा। ऊ मव रसएा हो मुज मन ज वेरंग का। मिहरआ 1
गलि नाम मोरडा ॥१४॥ तुं मनामे हा मो रा पाप पलाये क। जिम दान कागह चोरडा। तुं मनामइ हा सुषसंता
पायक मन वंछित फल मोरडा ॥१५॥ ऊं मागुं हा प्रभु अविरइ प्रेमक। नातर कोरु जिहोरडा। मुजरो ब्याता सामा

सवसेवक। चरण नमे कुंतोरउ ॥६॥ ...॥ श्रमअमर सुपरसे पसु पकाये। मातनें दांनें रण सेकलनें
प सात लनाघ सामा। सकजाने आनें दण ॥७॥ आबछलनें रण करण करचाण। रूप सुदरि सोहेइ। एलवनेंका
यो समय सुदरि। सुणतजाण मनमोहेइ। इति श्री पातिमनाथ स्तवन सुषकारण सेवा यथणसमरुंना
तनवकार। जाण सासण आगम। चऊदपुरव सार। रण मंतरमहमा। करतां नलाभे पार। सुरतरमन चीतव
इ। वंछितफलदातार ॥१॥ सुरदोन वमानेव सेवकने कारे जोडी। सुमंडलेवा चेरै। तारिससवा यण की। सुरवे
दइ वालसी। अतासय जास अनंत। पहलें पदनमाये। अरजं एआरिहंत ॥२॥ जेपनरसेद सिद्धयो वेसगवे
नपो चमागति पहुंता। अष्ट कर्म करी अंत। अलख अकलिसरूपा। पचानातें कहेदेह। सिद्धपाम पुरएम
बीजे पदव्लाएत ॥३॥ गछसारक्षरक्षर। सुदरि ससि हरसोय। करि सारण वारण। गुणछतीस इम्रोत सु
तेजोफिसो मणि आगार जेमगंसार। तीजेंपद नमायइ। आचार अगिरधार ॥४॥ सुतधर गुण आगर। सूत्र
सेणवे सार। तवविध सुसाधे। साधे अर्थविचार। मुनिवर गुणजुता। कहीयेते उवेसाय। चोथे पद नमाये। अ
हेनासते हनायाय ॥५॥ पंचाश्रवटाले। पालेपच आचार। तपसा गुण धारा। वारा विषय विकार। तसथावर
पालर लोकामोहिं साध। त्रिविधते प्रणमुं परमार्थ तेलाध ॥६॥ अरिकति हरासायण। भायणसुतवेताई। सबे
पाप पणसे। सासेंमगल नेमाल रोणसमससासकेट ऊरिहंनेतत कालें जंयगुणगणपुरु। सरवरसासरसा
ने ॥७॥ इति नवकार स्तवन संपूर्णं लिषितं गुमानी ...